P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

डॉ0 शैल रस्तौगी के ''हाइकु'' काव्य संग्रह में सौंदर्य विधान के संदर्भ में प्रकृति के विविध चित्रः एक सूक्ष्म विश्लेषण

कुसुम लता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
देवबन्द, उ0प्र0

सारांश

आज जिस गति से परिवर्तन एवं विकास हो रहा है उससे साहित्य सर्जन की प्रक्रिया भी जटिल हो गयी है। समय को पंख लग गये हैं। चारों ओर भागम–भाग का माहौल हैं। दैनिक दिनचर्या व्यस्त हो गयी है। त्वरा और आतुरता से भरे इस जीवन में मोटे–मोटे उपन्यास और लम्बी–लम्बी कहानियाँ पढना बीती बात हो गयी है। ऐसे समय में मनुष्य छोटी कविता और लघु कथाओं से मनोरंजन चाहता है। समय की माँग के अनुरूप लम्बी–लम्बी कविताओं के स्थान पर लघु कविता का प्रचलन प्रारम्भ हुआ और विभिन्न देशों से सम्पर्क एवं सम्बन्ध से कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में नये क्षितिज खुले। मिनी कविता, क्षणिका कविता, कैप्सूल कविता, सीपिका आदि कविता रूपों का जन्म हुआ है। कविताओं की इसी श्रृंखला में जापानी कलेवर से सजी 5–7–5 अक्षर क्रम वाली त्रिपदी लहवाकारी कविता का हिन्दी साहित्य में 'हाइकु' के रूप में अवतरण हुआ। सूक्ष्म रूप ने हिन्दी कवियों को अपनी ओर आकर्षित किया। परिणामस्वरूप आज हाइकु की प्रासंगिकता बहुत बढ गयी है।

मुख्य शब्द : प्रणालियाँ, आन्तरिक अनुभूतियाँ, क्षणभंगुरता, तादात्मय, ध्वंसात्वक, संवर्द्धित, श्लाध्य, मूर्त–अमूर्त, मानवीकरण, मानसिक औदात्य की रमणीयता।

प्रस्तावना

यह कटु सत्य है कि आज हाइकु कविता के प्रति यदि हमारी रूचि बढी है तो उसका ठोस और महत्वपूर्ण कारण यह है कि हाइकु प्रकृति के सानिध्य में ढली और साधारण व्यक्ति की परिस्थिति, उसके भावों, विचारों एवं दुःख–दर्द को यथार्थ ढंग से अपनी रचनाओं में उभार रही हैं यह केवल मनोरंजन के लिये नहीं है बल्कि पाठक समाज के जीवन को दिशा–निर्देश भी देती हैं और कष्टों में सघर्ष की प्रेरणा भी। दर्शन तथा आध्यात्मिकता एवं शाश्वत सत्य के प्रति सांकेतिकता हाइकु कविता के प्रमुख गुण है।

'हाइकु' शब्द जापानी शब्द 'होक्कू' से विकसित हुआ। ''हिन्दी में हाइकु शब्द का वर्ण विन्यास 'हाइकु, हायकु, हाईकू, हायकू के अनुसार 'हाइकु' ही उचित है।''[1] कवि ओत्सुजि हाइकु शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते है कि– 'निरपेक्ष स्थिति में पहुँचकर जब कवि के हृदय से गीत स्वतः फूट पडता है, तभी वह एक सफल 'हाइकु' की रचना में समर्थ होता है।''[2]

मूलतः 'हाइकु' जापानी काव्य की एक सशक्त विधा रही है जो जैन गुरूओं द्वारा अपनायी गयी और जापान से भारत में आयी। हाइकु 5–7–5 अक्षरक्रम से सुसज्जित 17 अक्षरी अतुकान्त त्रिपदी कविता है। इसके प्रथम पद में 5 अक्षर, द्वितीय पद में सात अक्षर और तृतीय पद में पाँच अक्षरों का विधान है। आकारगत् संक्षिप्तता हाइकु की एक अनिवार्य शर्त है जिसमें कुछ न कहकर भी सब कुछ कह दिया जाता है। जो 'गागर में सागर' की उक्ति को चरितार्थ करता है। हाइकु जीवन के किसी अनुभूत क्षण की सांकेतिक अभिव्यक्ति है, और यह क्षण यदि प्रकृति में रचा–बसा हो तो बात ही क्या? हाइकु परम्परा छठे दशक के उत्तरार्द्ध और सातवें दशक के प्रारम्भ में भारत आयी और भारतीय कवि मनीषा में रची–बसी।

वास्तव में हिन्दी में अनेकानेक छन्द और छन्दयुक्त कविताएँ तथा गद्य काव्य भी लिखा जाता रहा है। कविता के क्षेत्र में मिनी–कवितायें क्षणिकायें और मुक्तकों की धूम हैं किन्तु निश्चित अक्षरों वाले त्रिपदी छन्द की कमी भी जिसको हाइकु ने पूरा किया। जापानी भाषा के मर्मज्ञ डॉ0 सत्यभूषण वर्मा ने हाइकु को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''हाइकु शुद्ध अनुभूति की, सूक्ष्म आवगों की अभिव्यक्ति की कविता है। प्रकृति के साथ हाइकु का अनन्य सम्बन्ध हैं–हाइकु

जीवन के किसी अनुभूत सत्य की ओर इंगित करती हुयी सांकेतिक अभिव्यक्ति हैं ..... शिल्प की दृष्टि से हाइकु 5, 7, 5 वर्णक्रम में तीन पंक्तियों की सत्रह अक्षरी अतुकान्त कविता हैं। आकार की लघुता हाइकु का गुण भी है और यह उसकी सीमा भी।''[3]

हिन्दी के काव्य जगत में हाइकु की प्रथम अनुगूँज कराने का श्रेय अज्ञेय जी को जाता है। उनका काव्य संग्रह 'अरी ओ करूणा प्रभामय' जिसका प्रकाशन 1959 में हुआ, सर्वप्रथम जापानी शैली में रचित हाइकुओं का परिचय मिलता है। हिन्दी में हाइकुकारों ने भी इस विधा को सहर्ष अपनाया है। इनमें कुछ प्रमुख हाइकुकार है–डा0 भगवतशरण अग्रवाल, कमलेश भट्ट 'कमल', रामनिवास पन्थी, त्रिलोचन शास्त्री, केदारनाथ अग्रवाल, डॉ0 सत्यभूषण वर्मा, श्रीकान्त वर्मा, शमशेर बहादुर, भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, डॉ0 सत्यपाल चुघ, डॉ0 सुधा गुप्ता, उर्मिला कौल एवं डॉ0 शैल रस्तौगी आदि।

हिन्दी हाइकुकारों में अग्रणी डॉ0 शैल रस्तोगी छठे दशक की हाइकुकार है। डॉ0 रस्तौगी एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न एवं ऐसी वरिष्ठ साहित्यकार हैं, जिन्होने नाटक, एकांकी, आलोचना, शोध, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, गीत, कविता, मुक्त काव्य, दोहा इत्यादि के साथ–साथ सत्रह अक्षरों की त्रिपदीय काव्य विधा हाइकु के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। रस्तौगी जी ने प्रारम्भ में गीत लिखे हैं। फिर उनकी दष्टि 'हाइकु पत्र' पर गयी। 'हाइकु पत्र' को पढकर शैल जी को हाइकु लिखने की प्रेरणा मिली और उनके छः हाइकु संग्रह प्रकाशित हो चुके है। जो कि निम्नवत् हैंः–

1. प्रतिबिम्बित तुम 2. सन्नाटा खिंचे दिन 3. दुःख तो पाहुने है, 4. अक्षर हीरे मोती, 5. बाँसुरी है तुम्हारी, 6. मेहंदी लिखे ख़त।

प्रस्तत शोध पत्र में हम डा0 शैल रस्तौगी के हाइकु काव्य संग्रह के सन्दर्भ में सौन्दर्य विधान के अन्तर्गत प्रकृति के मनोरम चित्रों का सूक्ष्म विश्लेषण करेंगे। इस शोध पत्र का उद्देश्य हाइकु कविता के अनेक भाव बोध को उजागर करना हैं। जिसे डा0 रस्तौगी ने अपने मनोवेग द्वारा चित्रित किया। अतः प्रस्तुत शोध पत्र इस प्रकार निवेदित हैंः–

डा0 शैल रस्तौगी के 'हाइकु' काव्य में सौन्दर्य विधान

'सौन्दर्य' शब्द सुन्दर के भाव से बना अभिधान है, जिसका अर्थ हुआ आर्द्र या सरस करने वाला। वस्तु का वह गुण जो मन की सौन्दर्य–चेतना को आकर्षित करें, सौन्दर्य है। पण्डित राज जगन्नाथ ने काव्य को रमणीय अर्थ का प्रतिपादक कहा हैंः– रमणीय में आहलाद अथवा आनन्द तत्व समाहित रहता हैं। यह आनन्द ही सौन्दर्य का कारण है।''[4]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सौन्दर्य की विवेचना करते हुये लिखा हैं–''सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु हैं।[5]

इसी भाव को डॉ0 वीणा माथुर ने इस प्रकार व्यक्त किया है–''जिस प्रकार पुष्प में सुगन्ध एवं मृदुलता है और चन्द्रमा में शीतलता और स्निग्धता है उसी प्रकार काव्य में सौन्दर्यानुभूति।''[6]

इस प्रकार सौन्दर्य मन की वृत्तियों को अभिभूत करने वाला तत्व हैं और यह सृष्टि के अणु–अणु और कण–कण में विद्यमान है। डॉ0 शैल रस्तौगी जी के हाइकुओं का सौन्दर्य विधान इस प्रकार हैंः–

प्रकृति

हाइकु में प्रकृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रकृति चित्रण की विविध प्रणालियाँ हाइकु की विशिष्ट उपलब्धि है। कहा जाये तो हाइकु की मूल आत्मा प्रकृति ही है। प्रकृति चित्रण की विविध प्रणालियाँ हाइकु की विशिष्ट उपलब्धि है। प्रकृति मानव की चिर सहचरी रही है। वह मनुष्य के जीवन की बाह्य आवश्यकताओं के साथ–साथ आन्तरिक अनुभूतियों को भी प्रभावित करती है।

मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेकर उसी की गोद में चिर विश्राम लेता है, वह कहीं भी चला जाये स्वंय को प्रकृति से ही घिरा पाता है। यह सम्बन्ध अत्यन्त जीवन्त, संवेदनशील और गतिमान रहा है। ''हाइकु कवि की दृष्टि प्रकृति के गतिमान रूप पर पड़ती है जो निरन्तर परिवर्तनशील और नश्वर है। जीवन की क्षणभंगुरता के हाइकु कवि प्रकृति के गतिमान, नश्वर रूप में देखता है। हाइकु दृष्टि मनुष्य और प्रकृति में भेद नहीं करती। वह मनुष्य को प्रकृति के एक अंग के रूप में देखती है।''[7]

शैल जी के हाइकुओं में प्रकृति चित्रण उनकी सूक्ष्म पर्यवेक्षक शक्ति का परिचायक रही है। उन्होंने प्रकृति के नाना रूपों के प्रत्येक स्वर, प्रत्येक स्पंदन का अंकन अपने हाइकु संग्रहों में किया है। प्रकृति चित्रण जो कि हाइकु का एक अनिवार्य गुण है वह रस्तौगी जी के हाइकुओं में चिर नूतनता लिये हुआ है। प्रकृति के प्रति उनमें गहरा लगाव है। अतः प्रकृति की छठा अपने नये–नये आयामों के साथ उनके हाइकुओं में प्रस्तुत हुयी है। शैल जी ने प्रकृति का चित्रण अत्यन्त सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ किया है। इसलिये प्रकृति कहीं सौन्दर्य चित्र अंकित करने के लिये अलंकारों के रूप में आई हैं तो कहीं भावों को उद्दीप्त करने के लिये उद्दीपन रूप में अंकित हुई है। कहीं आलम्बन रूप में विकसित हुई तो कहीं प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। वह कहीं उपदेश देकर मानवों को शिक्षा प्रदान कर रही है तो कहीं प्रतीकात्मक रूप में उसके सौन्दर्य में वृद्धि कर रही है। इस प्रकार शैल जी ने बहुरूपा प्रकृति को विविध रूपों में अंकित किया है जो निम्न प्रकार हैंः–

आलम्बन रूप

शैल स्वभाव से ही प्रकृति प्रेमी रही है। उनका यही स्वभाव उनके हाइकु साहित्य को निखारने–संवारने में सहयोगी सिद्ध हुआ है। प्राकृतिक सौन्दर्य को उनका हृदय जिस रूप में देखता है उसी को उन्होंने हाइकुओं में रूपायित किया है। परिणामतः उनके प्रकृति सौन्दर्य के हाइकु साहित्य जगत में अप्रीतम बन पडे है।

प्रकृति को मुख्य विषय बनाकर प्रायः तटस्थ भाव से चित्रण करना ही आलम्बन है। ''प्रकृति का वर्णन स्वंय जब अपना लक्ष्य होता है, उसके वर्णन द्वारा प्राकृतिक

सौन्दर्य या दृश्य के प्रत्यंकन के अतिरिक्त कवि का जब दूसरा कोई लक्ष्य नहीं होता है तथा प्रकृति जब अपनी पूरी वास्तविकता और यथा तथ्यता के साथ बिना किसी प्रयोजन या भावारोप के उपस्थित की जाती है तब प्रकृति का वर्णन आलम्बन रूप में किया गया यथा तथ्य वर्णन माना जाता है।''[8]

शैल जी के हाइकु प्रकृति के विशाल और नाना रूपों से सुसज्जित हैं। सन्ध्या, रात, चाँद, धूप, सूरज, चाँदनी, उषा, बादल, तारे, वर्षा, ग्रीष्म, नदी, पहाड आदि का चित्रण अपने माधुर्य एवं मोहक रूप के साथ बड़े ही स्वाभाविक रूप मे हुआ है।

जाडों में दिन छोटे होते हैं। धूप कुछ समय के लिये आती है और चली जाती है। इसी तथ्य पर शैल का ये हाइकु प्रस्तुत हैंः– ''जाडे की धूप/आओ बैठो तो फिर/दोष न देना''[9]

प्रस्तुत हाइकु में शैल जी ने प्राकृतिक शक्ति का आभास सूर्य के माध्यम से कराया है कि बित्ते भर का सूर्य सम्पूर्ण त्रिलोक को नाप लेता हैंः–''बडा आश्चर्य/बित्ते भर का सूर्य/नापे त्रैलोक्य''[10]

इसी प्रकार तारे गिनते हुये जाड़े की रात बिताने का बड़ा ही हृदयगामी चित्रण शैल जी के इस हाइकु में हुआ हैंः– ''काटे न कटी/तारे गिनते बीती/जाड़े की रात''[11]

वर्षा ऋतु में जब बारिश होती है तो सुबह–शाम का पता हीं नहीं चलताः– ''बरसात में/पता ही नहीं चलता/भोर–साँझ का''[12]

शैल ने प्रकृति के नाना रूपों को बड़ी सजीवता के साथ अपने हाइकुओं में स्थान दिया है इसके लिये प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग आवश्यक हैं, जिसमें शैल जी समर्थ हैं। प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण करने के लिये शैल जी ने प्रकृति की नाना छवियों में व्याप्त उनके असली रंगो, नाना रागों और ध्वनियों का प्रतिचित्रण किया हैं। भंवरों की गुनगुनाहट, सूर्य की फुंकार, हवा की साँय–साँय, पत्तों की फडफड़ाहट आदि प्रस्तुत करने के लिये तादात्मयानुसारी शब्द योजना की है जिससे वर्णित दृश्य में अनुभूत होने वाली ध्वनियों का भी यथार्थ चित्रण किया जा सके।

नायक से मिलने की उत्कण्ठा जागृत होती हैंः– ''कैसे मिलूँ मैं?/साँवरियां बसन्त/आया बागों में''[13]

बसंत ऋतु जहाँ संयोग पक्ष में सुखद अनुभूति कराती है वही वियोग क्षणों में बसन्त के गीत उसे गूँगे लगते हैंः–''आया न कोई/गूँगे गीत बसन्त/झूठा था काणा''[14]

सावन ऋतु में मेघों का शोर नायिका की आँखों को बरसने पर विवश करता हैंः– ''सावन आया/मेघों ने शोर किया/छलको आँखे''[15]

प्रेमी के पास ना होने पर उसकी स्मृतियाँ हृदय में जागृत होती हैं जो स्वपन में खिलती मुरझाती हैंः– ''स्वप्न पलाश/खिलते मुरझाते/तुम न पास।''[16]

कवयित्री जब अपनी अन्तर्भावनाओं का आरोप प्रकृति कर देती हैं तब वह उससे अपना तादात्मय स्थापित कर लेती हैं उसके मन में अनेक प्रकार की संवेदनाएँ, आशा–आकाँक्षायें जग जाती हैं जिन्हें वह प्रकृति में विलीन कर देती हैः– ''कटते नहीं/सन्नाटा खिंचे दिन/गूँगी बस्तियाँ''[17]

शैल जी ने प्रकृति के ध्वंसात्मक रूप का भी चित्रण किया है। निम्न हाइकु भय के भाव को संवर्द्धित करने में समर्थ हैंः–''चिनार खड़े/सहमें, डरियाये/आँधी पानी में''[18]

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि कवियत्री के हाइकु मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण हैं और वे मानवी भावनाओं को उद्दीपन करने में सक्षम हैं।

आलंकारिक रूप

शैल जी ने अपने हाइकुओं में प्रकृति का अलंकारा के रूप में प्रयोग को अस्वीकार नहीं किया है। उन्होंने अलंकारों को अपने हाइकुओं में भावानुरूप स्थान दिया है जिससे उसके सौष्ठव पर कोई आँच नहीं आने पायी है। इन्होंने इनका सहज प्रयोग किया है, प्रयासपूर्वक उन्हें ठूंसा नहीं है। पंत जी ने अलंकारों के प्रयोग को लेकर अपने विचार स्पष्ट करते हुए लिखा है–''अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिये नहीं वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के लिये, राग की परिपूर्णता के लिये आवश्यक उपादान हैं, वे वाणी के आचार, व्यवहार रीति–नीति हैं.....।''[19]

प्राकृतिक उपकरणों का प्रयोग मानव सौन्दर्य के चित्रण में किया है। यहाँ प्रस्तुत हाइकु में शैल जी ने प्रकृति के उपमानों को ग्रहण करके हँसी का बड़ा ही श्लाध्य वर्णन किया हैं, उन्हें नायिका की हँसी धूप के खिलने के समान प्रतीत होती हैंः– ''शर्बती हँसी/तुम्हारें ओठो पर/धूप सी खिली''[20]

इसी प्रकार रजनीगंधा के माध्यम से नायिका का आँख मलते हुये हौले–हौले हंसने का शैल जी ने बडा ही मनोहारी चित्रण किया हैंः–''रजनी गन्धा/हौले–हौले हंसती/आँखे मलती''[21] इस हाइकु में शिक्षिका को हवा एवं शिशु को फूलो के उपमान से शैल जी ने सजाया हैंः– ''शिक्षिका हवा/आते ही लताड़ती/शिशु फूलों को''[22] इसी तरह शैल जी ने गुलाब की उपमा से बडा ही सुन्दर चित्र खींचा हैंः– ''खिला रहता/मेरा गुलाब मन/बाँह काँटो की''[23] कहीं भोर का रक्तिम और पीताभ सूर्य उन्हें सजा हुआ दूल्हा लगता हैं जो रोली उबटन लगाये हुये हैंः– ''मोर का सूर्य/रोली उबटन में/सजा दूल्हा''[24] तो कहीं लाल चूनर ओढ़े राजपूतानी उन्हें भोर के सदृश प्रतीत होती है जो बिन्दी बोरला लगाये हुये हैंः– ''लाल चुनर/राजपूतानी भोर/बिन्दी बोरला''[25]

इसी प्रकार मानव के दर्द का नीली झील के समान बताकर शैल जी ने अमूर्त के मूर्त और मूर्त के लिये अमूर्त उपमान योजना की हैंः– ''कैसे नापूँ मैं/दर्द झील का?/मन में झाकूँ''[26]

मानवीकरण रूप

जब प्रकृति का सचेतन रूप में प्राणियों की तरह कार्य व्यापार में लीन दिखाया जाता हैं वहाँ पर प्रकृति का मानवीकरण रूप चित्रित होता हैं। शैल जी ने प्रकृति का उपयोग मानवीकरण करके भी किया है। इन्होने अपने हाइकुओं में कितने ही स्थलों पर सजीव एवं सचेतन प्रकृति का चित्रण करते हुए उसे मानव चेतना से स्पन्दित और मानव सुलभ क्रिया–व्यापारों में संलग्न चित्रित किया

है। शाम को दिया जलाये तुलसी के चौरे पर बैठे, मानवीय रूप में चित्रित किया हैः– ''दिया जलाये/तुलसी के चौरे पें/बैठी है शाम''[27]

चाँद का प्रतिबिम्ब नदी में दिखाई दे रहा हैं। जिसे देखकर कवयित्री को ऐसा प्रतीत होता हैं कि इस आसमान के छींके पर टंगे चाँद का नहीं चुरा लाई है। कवयित्री की मन की कल्पना इस प्रकार व्यक्त हुयी हैः– ''टँगा था चाँद/चुरा लाई नदिया/दूर छींके से''[28]

इसी प्रकार दसो दिशाओं गूँगा, बहरा बताकर कवयित्री ने मानवीय मनोभाव का आरोप किया हैः– ''गूँगी बहरी/हुई दसों दिशायें/कहें सुने क्या''[29] क्रिकेट का रोमांच चारो और व्याप्त है शैल भी इससे अछूती नहीं रही है। उनके इस हाइकु में पीपल, आम, क्रिकेट खेलते हुए दर्शनीय हैः– ''उपवन में/क्रिकेट खेल रहे/पीपल, आम''[30]

सार रूप में कह सकते है कि रस्तौगी ने प्रकृति की विविध क्रियाओ को मानव की तरह आचरण करते हुये अंकित किया है। वे प्रकृति की व्यथा देखकर व्यथित होती है और उसके हर्ष में उल्लिखित।

उपदेशिका रूप

पकृति का उपदेशिका रूप प्राचीन काल से ही भारतीय साहित्य में चला आ रहा है। अपने मूक कार्य–कलापों से प्रकृति मानव के जीवन विकास में सदुपदेश देती रहती है। जिससे चेतन मानव प्रकृति को प्रेरणा–स्त्रोत मानकर अपने व्यवहार को निरन्तर उदार बना सकता है। डॉ0 शैल रस्तौगी जी ने अपने हाइकुओं में मानव को नैतिक, उपदेश देने के लिये प्रकृति के उपदेशात्मक रूप का उपयोग अनेक स्थलों पर किया है। पेड़ों के माध्यम से वे लोगो को अभिमन छोड़ने की शिक्षा देती हैः– ''झुके हैं पेड़/हरियाला संसार/लगता प्यारा''[31] इसी प्रकार बालू के माध्यम से शैल का अभिप्राय है कि घर, प्रेम और विश्वास से बनता है न कि कटुता और धोखे सेः– बालू का घर/चाहे लाख बनाओ/टिकेगा कैसे''[32]

अंधेरे और दीये के माध्यम से शैल जी कहती है कि चाहे हम कितना ही झूठ क्यों न बोल दें, किन्तु जब सत्य रूपी दीये का प्रकाश सामने आता है तो सारे भेद अपने आप खुल जाते हैः–''भेद खोलता/अंधेरा जो बोलता/दिया जानता''[33]

जिस प्रकार सूर्य हमेशा गतिमान रहकर अपने प्रकाश पूँज को फैलाता है उसी प्रकार हमें भी अपने ज्ञान को निरन्तर बढाते हुये फैलाना चाहियेः–''रूकेगा नहीं/सात घोडों वाला है/ये सूर्य रथ''[34]

प्रतीकात्मक रूप

''कवि जहाँ भावसाम्य के आधार पर वर्णनीय विषय की व्यंजना करने के लिये प्रकृति से उपादान ग्रहण करता है वहाँ प्रकृति का प्रतीकात्मक चित्रण होता है।''[35]

शैल जी के हाइकुओं में प्रकृति के उपादान अपने परम्परागत एवं नवीन रूप में प्रतीकार्य ग्रहण करते देखे जाते हैं। रेगिस्तान प्रायः उजड़ेपन का प्रतीक है। जिसके माध्यम से कवयित्री ने जीवन को इस प्रकार दर्शाया हैः– ''पूरा रेगिस्तान/रेतीला रेगिस्तान/आँधी तूफान।''[36] शैल के हाइकुओं में प्रतीक अपने परम्परागत रूप में प्रयुक्त होने के कारण सहज एवं सरल हैं। यहाँ कलियां अपने परम्परागत् रूप नवयौवना एवं अर्द्धविकसित जीवन के प्रतीक रूप प्रयुक्त हुई हैः– ''हिंडौले बैठी/सजी–धजी कलियाँ/आँचल उडे।''[37] रस्तौगी ने जहाँ अपने हाइकुओं में परम्परागत् प्रतीकों का प्रयोग किया है वहीं नवीन प्रतीकों को भी अपने हाइकुओं में स्थान दिया है। ''गलिफन सोई/खुली है एक आँख/सपने मोती।''[38]

इसी प्रकार शैल ने जीवन को एक युद्ध के समान हल्दी घाटी के प्रतीक रूप म प्रयुक्त किया हैः–''हल्दी घाटी था/फिर भी बीत गया/जीवन कैसे।''[39]

नारी

शैल जी स्वंय एक नारी हैं। अतः उनके हाइकुओं में प्रकृति, सौन्दर्य के साथ–साथ नारी सुलभ विशेषतायें भी सहज रूप में आ गयी। रस्तौगी की सौन्दर्य भावना मानव के बाह्य सौन्दर्य की अपेक्षा विश्व मानसिक औदात्य की रमणीयता की अभिव्यंजक है जिसमें मार्धुय और मोहकता का समावेश है। हाइकु के रचना विधान में मात्र सत्रह अक्षरों की अनिवार्यता होने के कारण उसमें एक–एक अंग के सौन्दर्य का पृथक–पृथक चित्रण कर पाना असंभव है। अतः शैल जी ने नख शिख सौन्दर्य का निरूपण तो नहीं किया किन्तु सौन्दर्य के संश्लिष्ट चित्र अवश्य खींचे है। जो प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से अत्यन्त सफल है। साथ ही स्पेशल भी। निम्न हाइकुओं में शैल ने नेत्रों की सुन्दरता एवं लावण्य का बडा ही मनोरम चित्र खींचा हैः– कुनद कली सी/तुम्हारी दो आँख ये/सौ–सौ स्मृतियाँ।''[40]

शैल मानव–सौन्दर्य के चित्रण में मांसलता और अश्लीलता के पक्षधर नहीं है वे तो ऐसे रूप की चितेरी है जो उदात्तताओं और मर्यादाओं के घेरे में घिरी हैं जिसे देखकर मन–प्राणों में सौन्दर्य की शत–शत पुलकनें गुंथ जाती हैं। प्रिय को देखकर लज्जा से लाल हो जाने वाली कली का सौन्दर्य भी अप्रीतम हैं। देखियेः–''नवेली कली/भ्रमर के आते ही/लाल हो गई।[41]

इसी प्रकार प्रिय के आगमन पर प्रियतमा के ओठों–ओठों में मुस्काना भी बडा कमनीय हैं। ''तुम्हारा आना/भोर का मुसकुराना/ओठों–ओठा में''[42]

शैल ने अपने हाइकुओं में स्त्री के संघर्षमय जीवन को भी अभिव्यक्ति प्रदान की हैं यथाः–''धान कूटती/सपने बुनती है/गाँव की बेटी।''[43] शैल ने नारी के अर्न्त में निहित समन्वय एवं अपना सर्वस्व देने के गुण को भी अपने हाइकु भी उकेरा हैः– ''खुशी की बात/काश तुम्हें दे पाऊँ/अपनी धूप''[44] नारी नाना गुणों से सम्पन्न है। उन्होंने नारी के विभिन्न रूपों पर भी दृष्टि डाली हैः–

माँ के रूप में नारी

नारी को इस रूप में ही मानों उसकी सार्थकता है। हमारे देश में मातृत्व से वंचित नारी को सम्मानजनक स्थान नहीं मिल पाता। माता ममतामयी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति होती है। वह अपने बच्चों को खाना खिलाती हैं, लोरियाँ गा के सुलाती हैं। शैल ने इन हाइकुओं में इसी भाव को उकेरा हैः–

''साफ सुथरी/महकती रसोई/रोटी जो पोई''[45]

''बडी मीठी है/माँ के हाथ की रोटी/कितनी छोटी''[46]

''लोरियाँ गा दे। ओ नदी महतारी/मुझे सुला दे''[47]

''चिड़िया माँ है। नयनों में वात्सल्य/मन में ऊर्जा''[48]

बहन के रूप में नारी

भारतीय समाज में भाई–बहन का रिश्ता ही एक ऐसा सम्बन्ध है जिसमें निश्चल, स्नेह एवं निष्कलुषता की भावना प्रतिष्ठित रहती हैं शैल ने अपने हाइकुओं में नारी के इस रूप को बडी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है, जिसमें बहन–भाई की कलाई पर राखी को बाँधती है और फिर शगुन के तौर पर नेग भी माँगती है यथाः–

''मैना की राखी/भइया की कलाई/यादें ही साखी''[49]

''औ चन्दा भैया/चूनर चाँदनी की/माँगे बहना''[50]

बेटी के रूप में नारी

बेटियाँ तो पराया धन होती हैं। जिन्हें माता–पिता सहेज कर रत्न की भाँति रखते हैं जिनके घर में होने से घर की रौनक में चार चाँद लग जाते हैं।

प्रेयसी के रूप में नारी

प्रेयसी का रूप अतृप्ति जनित हुआ करता हैं इसे ही सृष्टि की बीजरूपा भावना कहा जाता हैं।''[51] प्रेयसी के रूप में शैल ने नारी के स्वछन्द रूप को प्रस्तुत किया हैं जिसमें कहीं नायक और नायिका आँखों में आँखे डाल बातें करते रहते हैं तो कहीं नायक की बन्द आँखों में नायिका के दोनो नेत्र तैरते रहते हैः–''अमलतास। आँखो में आँखे डाल/ बतियाते से।''[52]

अन्य सौन्दर्य रूप

शैल जी ने पशु, पक्षियों, प्रकृति के नाना रूपों, बाल सौन्दर्य, सामाजिक कार्यों एवं मानव निर्मित अनेक उपादानों में भी सौन्दर्य का दर्शन किया है।

बाल सौन्दर्य का चित्रण भी हमें शैल के हाइकुओं में देखने को मिलता है। बाल सौन्दर्य के उन्होंने बडे ही स्पष्ट चित्र खीचें हैं। प्रस्तुत हाइकु में शैल जी दुधमुही बालिका के बाल्यवस्था का बडा ही मनोमुग्धकारी चित्र खींचती हैंः– ''बालिका ऊषा/दुधमुही बच्ची सी/बहुत भोली[53]

भारतीय समाज में कुछ ऐसी परम्परायें है जिनका मानव खुशी–खुशी निर्वाह करता रहता हैं। इनका पालन करने में उसे बहुत ही सुखद अनुभूति का एहसास होता हैं। शैल ने इन्ही सामाजिक कार्यों का बडा ही सौन्दर्यपरक चित्रण अपने हाइकुओं में किया है।

विवाह एक ऐसा सामाजिक बन्धन है जो अपने आप में अनूठा हैं इस समय होने वाले सुहाग गीत मन को छू लेने वाले होते हैंः– ''सुहाग–गीत/गाने लगी हवाएँ/लग्न के दिन।''[54]

खुशी के अवसर पर सास, जिठानी, ननद अपनी बहू से नेग माँगती है और बहू उदास है। इसी का सुन्दर चित्रण शैल ने अपने इस हाइकु में किया हैं:–''नेग माँगती/सास, जिठानी, ननद/बहू उदास''[55]

मानव निर्मित उपादानों का शैल जी ने अपने हाइकुओं में बडा ही सहज एवं संश्लिष्ट रूप सौन्दर्य प्रस्तुत प्रस्तुत किया हैं। गांवों में लगने वाली हाट की छटा ही निराली है। ''हाट सजी है/रंगो और गंधों की/फागुन आया''[56]

निष्कर्षत

डॉ0 शैल रस्तोगी के हाइकुओं का सौन्दर्य विधान प्रकृति के विविध रूपों में अपनी कसौटी पर खरा उतरा है। उनका विजन पूर्णतः स्पष्ट है और यही स्पष्टता उनके साहित्य को वैशिष्टय प्रदान करता है। उनके हाइकुओं में प्रकृति का कोमल और सूक्ष्म वर्णन किया गया है। ऋतु परिवर्तन के साथ–साथ प्रकृति की छटा अपने नए–नए रूप लेकर प्रकट हुयी है। वस्तुतः उन्होंनें प्रकृति में ही सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के दर्शन कर लिये हैं।

यही कारण है कि डॉ0 रस्तोगी की रचनायें कलात्मक मूल्यों का समन्वय करे हुए रचनात्मकता के लिये प्रेरित करती हैं। उनकी कविताओं के शब्दों में जहाँ एक ओर विचारों का विस्फोट है तो दूसरी ओर भावनाओं की मधुर झंकार भी है। अपनी पूरी सोच विन्यास, विचार–सम्पन्नता और प्रविधि में कवियत्री ने हिन्दी साहित्य को नया अर्थ दिया तथा उसे अधिकाधिक जनोपयोगी बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी कवियित्रियों की 'हाश्कुन्काव्य साधना', डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल, पृ0 6
2. ओत्सुजि, हाइरोन, शू, पृ0 31
3. हाइकु 1989, प्रस्तावना, पृ0 1213
4. 'रस गंगाधर', पण्डित राज जगन्नाथ पृ0 सं0 13
5. चिन्तामणि भाग 1, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ0 सं0 164
6. प्रसाद का सौन्दर्य दर्शन, डॉ0 वीणा माथुर, पृ0 सं0 52
7. जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता, डॉ0 सत्यभूषण वर्मा पृ0 35
8. छायावादी काव्य, डॉ0 कृष्ण चन्द्र वर्मा पृ0 सं0 81
9. प्रतिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 2, पृ0 सं0 8
10. मेंहदी लिखे खत, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 155, पृ0 सं0 39
11. प्रतिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 260, पृ0 सं0 73
12. सन्नाटा खिंचे दिन डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 31, पृ0 सं0 142
13. बाँसुरी है तुम्हारी डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 21, पृ0 सं0 19
14. बाँसुरी है तुम्हारी, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 82, पृ0 सं0 40
15. प्रतिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 44, पृ0 सं0 18
16. मेंहदी लिखे खत, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 38, पृ0 सं0 16
17. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 18, पृ0 सं0 1
18. मेंहदी लिखे खत, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 2, पृ0 सं0 9
19. सुमित्रा नंदन पंत, पल्लव (प्रदेश), पृ0 सं0 32
20. प्रतिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 83, पृ0 सं0 28

21. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 70, पृ0 सं0 36
22. दुःख तो पाहुने हैं, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 91, पृ0 सं0 41
23. दुःख तो पाहुने हैं, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 50, पृ0 सं0 118
24. प्रतिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 98, पृ0 सं0 32
25. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 161, पृ0 सं0 66
26. दुःख तो पाहुने हैं, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 56, पृ0 सं0 137
27. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 97, पृ0 सं0 45
28. दुःख तो पाहुने हैं, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 68, पृ0 सं0 173
29. छायावाद के गौरव चिन्ह, प्रो0 क्षेम, पृ सं0 129
30. दुःख तो पाहुने हैं, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 140, पृ0 सं0 57
31. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 157, पृ0 सं0 65
32. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 99, पृ0 स0 24
33. प्रतिबिम्बत तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 55, पृ0 सं0 21
34. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 119, पृष्ठ सं0 52
35. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 113 पृष्ठ सं0 27
36. हिन्दी हाइकु कविता : परम्परा और प्रयोग, डॉ0 प्रभा शर्मा, पृ0 सं0 176
37. दुःख तो पाहुने हैं, डॉ0 शैल रस्तोगी, पृ0 सं0 174 पद सं0 68
38. बाँसुरी है तुम्हारी, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 232, पृ0 सं0 90
39. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 68, पृ0 सं0 35
40. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 251, पृ0 सं0 20
41. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 205, पृ0 सं0 42
42. प्रतिबिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 98, पृ0 सं0 32
43. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 61, पृ0 सं0 18
44. सन्नाटा खिंचे दिन डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 288, पृ0 सं0 55
45. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 78, पृ0 सं0 38
46. प्रतिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 165, पृ0 सं0 49
47. मेंहदी लिखे खत, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 331, पृ0 सं0 74
48. बाँसुरी है तुम्हारी, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 246, पृ0 सं0 94
49. बाँसुरी है तुम्हारी, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 264, प0 सं0 100
50. अक्षर हीरे मोती, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 135, पृ0 सं0 57
51. मेंहदी लिखे खत, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 34, पृ0 सं0 15
52. बाँसुरी है तुम्हारी, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 84, पृ0 सं0 40
53. मेंहदी लिखे खत, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 93, पृ0 सं0 27
54. प्रतिबिम्बित तुम डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 72, पृ0 सं0 25
55. सन्नाटा खिंचे दिन, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 32, पृ0 सं0 145
56. प्रतिबिम्बित तुम, डॉ0 शैल रस्तोगी, पद सं0 197, पृ0 सं0 57